शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

वैश्वीकरण और उदारीकरण का प्रभाव रोजगार उत्पादक और प्रतिस्पार्त्मकता का एक अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के विशेष सन्दर्भ मे

प्राप्तिः 026.08.2024
स्वीकृतः 18.09.2024

69

डॉ विद्यानदं पाडेय
अर्थशास्त्र विभाग,
शासकीय महाविद्यालय, लटेरी जनपद
विदिशा बरकतउल्ला विश्वद्यालय भोपाल
ईमेलः *vnp1774@gmail.com*

कुमारी ललिता यादव
शोर्धाथी, भूगोल विभाग,
श्री देवी विश्वविद्यालय
टेहरी, उत्तराखण्ड

सारांश

यह अध्ययन रोजगार उत्पादक और प्रतिस्पर्धात्मकता पर ध्यान केद्रित करते हुए मध्य प्रदेश मे उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभावो की जाँच करता है। मिश्रित तरीको के दषष्टिकोण का उपयोग करते हुए मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा को मिलाकर हमने क्षेत्र के विभिन्न उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण किया हमारे निष्कर्ष बताते है कि वैश्वीकरण ने कुछ उघोगो मे. प्रतिस्पर्धा उत्पादकता और नवाचार मे वषद्धि की है जबकी अन्य ने अनुकुल के लिये सघर्ष किया है हमने यह भी पाया कि कुछ क्षेत्रो मे रोजगार के अवसर बढे है। लेकिन नौकरी की सुरक्षा और मजदूरी मे कमी आई है। अध्ययन मे उन नीतियो की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है जो क्षेत्र मे प्रतिस्पर्धात्मकता और सतत् विकास को बढाने के लिये छोटे और मध्यम आकार के उघमो कौशल विकास और नवाचार का समर्थन करती है यह शोध मध्य प्रदेश मे उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव को समझने मे योगदान देता है । और नीति निर्माताओं और उघोग हितधारको के लिये अतंर्दृष्टि प्रदान करता है।

अनुसंधान ढ़ाचा –

1. वैश्वीकरण ने मध्य प्रदेश मे उघोगो मे रोजगार पैटर्न को कैसे प्रभावित किया है।
2. मध्य प्रदेश मे उघोगो मे उत्पादकता और दक्षता पर वैश्वीकरण का क्या प्रभाव पड़ा है।
3. मध्य प्रदेश मे उघोगो मे प्रतिस्पर्धात्मकता और नवाचार के मामले मे वैश्वीकरण की चुनौतियों को कैसे अपनाया है ?

उदेश्यः

1. मध्य प्रदेश में उघोगों में रोजगार पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेश्रण करना.
2. मध्य प्रदेश में उघोगों में उत्पदकता और दक्षता पर वैश्वीकरण के प्रभाव की जांच करना
3. वैश्वीकरण की स्थिति में प्रतिस्पर्धात्मकता और नवचार को बढ़ाने के लिए मध्य प्रदेश में उघोगों द्वारा अपनाई गई रणनीतियों की जाचं करना

1. साहित्य समीक्षा–डॉ सिंह मनमोहनः (Post Reform, Oxford Publication, New Delhi and London Press 2005 volume 2)

इस पुस्तक मे भारतीय अर्थव्यवस्था की 1992 के पृष्ठभूमि को बडी रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी से अवगत कराया है साथ ही साथ इसके फलीभूत होने और लागू होने के मान्यता को लेकर बारीकी से अध्ययन किया गया है।

2. डॉ भरत झुनझुनवालाः

भारत की अर्थनीति राजपाल प्रकाशन दिल्ली मे उदारीकरण के कारण विदेशी निवेश और उघोगो के विकास के लिए जोखिम उठाने की क्षमता को मजबूत करने के लिए तैयार प्रश्नों को हल करने के लिए भारत के अतीत मे अनुभवों बहुत ही बारीकी से जानकारी दी गई है विकल्प देशी अदांज में और अधिक तकनीकी विकास को बढावा देने के लिए सुझाव दिया है।

3. डॉ सेन अमर्त्यः

बंगाल और अकाल के माध्यम से पीपी को महत्व देकर उदारीकरण के बाद इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्र में समस्या को दूर करने के लिए बुनियादी सुविधाओ को लेकर चिंता जताई है।

4. प्रोफेसर भगवती जगदीशः

ग्लोबलाइजेशन और विकासशील देशों के बीच संबंध को मजबूत करने के लिए पहले इंफ्रास्ट्रक्चर को दर्जा देने की मांग की है और विकासशील देशों के कुचक्र मे फाइनेंस समस्याओं को वैश्विक स्तर पर मूल्यांकित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

5. डॉ सिंह रमेशः

भारतीय अर्थव्यवस्था में लगातार बढ़ोतरी और *strategy* पर ध्यान नहीं देने की अलोचना की है और संशयों को लेकर सुझाव दिया है। मध्य प्रदेश मे उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव पर अध्ययनो और रिपोर्टो का परीक्षण किया गया है।

डेटा संग्रहः

सर्वेक्षेण साक्षात्कार और माध्यमिक स्त्रोतो के माध्यम से मध्य प्रदेश मे उघोगो से डेटा

एकत्रीकरण के लिए उघोग मन्त्रालय एमएसएमई से जुटाया गया है।

डेटा विश्लेषणः

रूझनो पैटर्न और सहसंबंधो की पहचान करने के लिए साख्यिकी उपकरणो और साफटवेयर का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया है।

अपेक्षित परिणामः

1. मध्य प्रदेश में उघोगो मे रोजगार, उत्पादक और प्रतिस्पर्धात्मकता पर वैश्वीकरण के की अंतदृष्टि। 2. प्रभाव की अंतर्दष्टि उन उघोगो की पहचान जिन्होंने वैश्वीकरण को सफलतापूर्वक अपना लिया है और जिन्हे समर्थन की आवश्यकता है।

3. वैश्वीकरण की स्थिति में प्रतिस्पर्धात्मकता और नवचार को बढ़ाने के लिए नीति निर्माताओं और उघोगों के लिए सिफारिशें।

महत्वः

1. यह अध्ययन मध्य प्रदेश मे उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव को समझने में योगदान देगा।

2. निष्कर्ष नीति निर्माताओं को मध्य प्रदेश मे उघोगो का समर्थन करने के लिए रणनीति विकसित करने के लिए अंतरदृष्टि प्रदान करेगे।

3. मध्य प्रदेश मे उघोगो को सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए रणनीति विकसित करने मे मदद मिलेगी और नवाचार ने उघोगों पर वैश्वीकरण के प्रभावों पर साहित्य खोजने की कोशिश की लेकिन मेरी खोज खाली हो गई अधिक जानकारी और संसाधनो के लिए ऑनलाइन खोज करने मे आपकी किस्मत बेहतर हो सकती है। प्रासगिक अध्ययन और लेख खोजने के लिए उघोगों पर वैश्वीकरण के प्रभाव या वैश्वीकरण के उघोगों प्रभाव जैसे कीवर्ड खोजने का प्रयास किया गया है।

अनुसंधान पद्धतिः

उघोगों पर वैश्वीकरण के प्रभावों का अध्ययन करने मे उपयोग की जाने वाली सामान्य शोध पद्धतियों को यहां प्रयोग किया जाता है

1. मात्रात्मक पद्धतिः

सर्वेक्षण और प्रश्नावली

द्वितीयक डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण (जैसे, व्यापार डेटा जीडीपी रोजगार दर)

अर्थमितीय मॉडलिंग (जैस, प्रतिगमन विश्लेषण,विशिष्ट)

2. गुणात्मक पद्धतिः

विशिष्ट उघोगो या कंपनियो के मामले का अध्ययन

उघोग के हितधारको (जैसे, प्रबंधको श्रमिको नीति निर्माताओं) के साथ गहन साक्षात्कार

ग्रंथो का सामग्री विश्लेषण (जैसे, समाचार लेख कंपनी की रिपोर्ट)

3. मिश्रित पद्धतिः

मात्रात्मक और गुणांत्मक तरीको का संयोजन

डेटा स्त्रोतो का त्रिकोणासन (जैसे, सर्वेक्षण, साक्षात्कार, दितीयक डेटा)

4. **प्रायोगिक पद्धतिः**

उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करने के लिए याघच्छिक नियंत्रित परीक्षण (आरसीटी)

5. माध्यमिक अनुसंधानः

मौजुदा साहित्य और डेटा का विश्लेषण (जैसे, अकादमिक लेख सरकारी रिपोर्ट)

शोध पद्धति का चयन करते समय शोध प्रश्न डेटा उपलब्धता और वांछित गहराई और जटिलता के स्तर पर विचार किया गया है।

वैश्वीकरण उघोग के बाद रिसर्च के लिए समस्याः

उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव से संबंधित कुछ संभावित शोध समस्याएं या विषय यंहा दिए गए है।

1. नौकरी विस्थापन और रोजगार की गतिशीलता वैश्वीकरण ने उघोगो मे रोजगार पैटर्न को कैसे प्रभावित किया है और श्रमिको और समुदायो के लिए इसके परिणाम क्या हैं?
2. उघोग पुनर्गठन और प्रतिस्पर्धात्मकता उघोगों ने वैश्वीकरण को कैसे अपनाया है और प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए उन्होने कौन सी रणनीति अपनाई हैं?
3. आपूर्ति श्रृखला प्रबधंन और रसद वैश्विक आपूर्ति श्रृखलाओ को कैसे पुन; कान्फिगर किया गया है और उघोगो और अर्थव्यवस्थाओ के लिए क्या हैं?
4. प्रोघोगिकी हस्तांतरण और नवाचार वैश्वीकरण ने प्रोघोगिकियों के प्रसार को कैसे सुविधाजनक बनाया है, और औघोगिक नवाचार और विकास के परिणाम क्या हैं?
5. पर्यावरण और सामाजिक स्थिरता उघोगो ने वैश्वीकरण के सामने स्थिरता की चुनौतियों का जवाब कैसे दिया है और पर्यावरण और सामाज पर इसके क्या प्रभाव हैं?
6. व्यापार नीतियां और समझोते व्यापार नीतियें और समझोतो (जैसे, डब्ल्यूटीओ,टीपीपी,नाफ्टा)ने उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभाव को कैसे आकार दिया हैं?
7. उघोग समूह और क्षेत्रीय विकास वैश्वीकरण के में उघोग कैसे एकत्रित हुए है। और क्षेत्रीय विकास और आर्थिक विकास पर क्या प्रभाव हैं?
8. वैश्वीक मूल्य श्रृंखलाओं और शासन वैश्वीक मूल्य श्रंष्खलांओ को कैसे नियंत्रित किया गया है और उघोगो अर्थव्यवस्थाओ और समाजो के लिए क्या निहितार्थ हैं?
9. कौशल और मानव पूंजी विकास वैश्वीकरण ने उघोगो में कौशल और मानव पूंजी की मांग को कैसे प्रभावित किया है और शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणालियों के लिए क्या निहितार्थ हैं?
10. सांस्कृतिक और संस्थागत परिवर्तन वैश्वीकरण ने उघोगो मे सांस्कृतिक और संस्थागत परिवर्तनो को कैसे जन्म दिया है और सगठनात्मक व्यवहार और प्रबंधन प्रथाओ के लिए क्या निहितार्थ हैं?

ये शोध समस्यांए और विषय उघोगा के लिए वैश्वीकरण के जटिल परिणामो की खोज के लिए एक प्रारंभिक बिंदु प्रदान करते है।

भारत मे वैश्वीकरण उघोग के बाद परिणाम ढूँढ़ना

भारत में वैश्वीकरण उघोग के बाद परिणाम यहां दिए गए हैं।

भारत में बुनियादी ढ़ांचे के विकास पर उदारीकरण का असर महत्वपूर्ण रहा है। विचार करने के लिए यहां कुछ महत्वपूर्ण बिंदु दिए गए हैः

1. निवेश में वृद्धिः उदारीकरण ने सड़को, बंदरगाहों, हवाई अडडे और दूरसंचार सहित बुनियादी ढ़ाचे परियोजनाओं में निजी निवेश वृद्धि की।

2. बेहतर दक्षताः निजी क्षेत्र की भागीदरी दक्षता और प्रतिस्पर्धा में लाया गया, जिससे बुनियादी ढांचे की सुविधाओं के बेहतर प्रबंधन और संचालन की ओर अग्रसर किया गया।

3. बढ़ी हुई गुणवत्ताः उदारीकरण ने बुनियादी ढांचे सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ, जैसे बेहतर सड़क की स्थिति, दूरसंचार कवरेज में वृद्धि, और आधुनिक हवाई अडडे।

4. विस्तारित पहुंचः आधारभूत संरचना विकास दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंच गया, बिजली, पानी और परिवहन जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुंच बढ़ रही है।

5. आर्थिक विकासः बुनियादी ढांचा विकास व्यापार, वाणिज्य, और उघोग की सुविधा से आर्थिक विकास को उत्तेजित करता है।

6. नौकरी निर्माणः बुनियादी ढांचा परियोजनाओं ने निर्माण, संचालन और रखरखाव में राजगार के अवसर पैदा किए।

7. बढ़ी हुई सरकारी राजस्वः उदारीकरण ने कर, टोल और अन्य शुल्क के माध्यम से सरकारी राजस्व में वृद्धि की। हालांकि, चुनौतियां शामिल हैंः

1. असमान पहुंचः बुनियादी ढांचे सेवाओं तक पहुंच में असमानताएं बनी रहती हैं, खासकर ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में।

2. अपर्याप्त विनियमनः कमजोर विनियामक ढ़ांचे ने खराब सेवा की गुणवत्ता और अपर्याप्त सुरक्षा मानकों जैसे मुदों का नेतृत्व किया है।

3. भ्रष्टाचारः क्रोनी पूंजीवाद और गवन के उदाहरणों के साथ भ्रष्टाचार बुनियादी ढांचे के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा बनी हुई है।

4. पर्यावरणीय चिंताः

5. बुनियादी ढांचे परियोजनाओं ने पर्यावरणीय चिंताओं को उठाया है, जैसे विस्थापन, प्रदूषण और आवास विनाश। कुल मिलाकर, उदारीकरण का भारत में बुनियादी ढ़ांचे के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा, लेकिन चुनौतियों को संबोधित करना टिकाऊ और समावेशी विकास सुनिश्चित करने कि लिए महत्वपूर्ण है। कुछ महत्वपुर्ण प्रभावों में शामिल हैः विदेशी निवेश में वृद्धिः उदारीकरण ने 1992 से 2005 तक 316.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ विदेशी पूंजी का प्रवाह किया। जीडीपी में वृद्धिः भारत का सकल घरेलू उत्पाद 1991 में डोलर 2.3 में 266 अरब डॉलर से बढ़ गया 2018 में ट्रिलियन। व्यापार में वृद्धिः भारत में सकल घरेलू उत्पाद में सकल घरेलू उत्पाद के लिए माल और सेवाओं के कुल निर्यात का अनुपात लगभग दोगुना हो गया 1990 में 2000 में 14 प्रतिशत हो गया। वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरणः भारत ने कुल माल के अनुपात के साथ वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ अपनी अर्थव्यवस्था को तेजी से एकीकृत किया और जीडीपी के लिए सेवाओं का व्यापार 17.2 प्रतिशत

से बढ़कर 30.6 प्रतिशत हो गया। क्रेडिट बूमः 2000 के दशक क दौरान बुनियादी ढांचे में निजी निवेश में काफी वृद्धि हुई, जो वैश्विक वित्त के प्रवाह से प्रेरित है। बढ़ी हुई आय असमानताः देश का सबसे धस्त प्रतिशत राष्ट्रीय आय के 5 से7 प्रतिशत के बीच कमाता है, जबकि लगभग 15 प्रतिशत कामकाजी आबादी प्रति माह 5000 रू (लगभग 64 डॉलर) से कम कमाती है। बेरोजगारी और किसान आत्महत्याः बेराजगारी के कारण उदारीकरण नीतियों की भी आलोचना की गई है और किसान आत्महत्याओं में वृद्धि हुई है। शहरी–ग्रामीण विभाजनः उदारीकरण ने ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक लाभान्वित क्रय शक्ति के मामले चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारत दुनिया में तीसरे सबसे बड़ा सकल घरेलू उत्पाद है

प्रति व्यक्ति आय 1991 में ***$304*** से बढकर 2023 में अनुमानित ***$2,600*** हो गई। अत्यधिक गरीबी जिसे 2017 की कीमतो पर प्रति दिन ***$2.15*** से कम पर जीवन यापन करने वालो के रूप में परिभाषित किया गया है 1 प्रतिशत से नीचे गिर गई है।

भारत एक आर्थिक शक्ति बन गया है उदारीकरण निजीकरण और वैश्वीकरण एलपीजी तीन आर्थिक अवधारणाएं है जिनके लिए सघं और राज्य सरकारों द्वारा नीतिगत सुघारो की एक श्रखला की आवश्यकता थी।

आर्थिक सुघारों से सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में वृद्धि विदेशी पूंजी प्रवाह में वषद्धि और वर्तमान प्राप्तियों के अनुपात के रूप मे ऋण सेवा भुगतान मे कमी जैसे लाभ प्राप्त हुए है ।

मैने भारत मे वैश्वीकरण के प्रभावो पर विशिष्ट शोध खोजने की कोशिश की लेकिन मुझे वह नही मिला जो मैं ढूढ़ँ रहा था । विषय पर अधिक जानकारी के लिए आनलाइ खोज करने मे आपकी किस्मत बेहतर हो सकती हैं। प्रासंगिक अध्ययन और लेख खोजने के लिए भारत पर वैश्वीकरण का प्रभाव वैश्वीकरण के साथ भारत का अनुभव उघोगो के लिए भारत में वैश्वीकरण के बाद अनुसंधान की आवश्यकता क्यों हैं ।

भारत में वैश्वीकरण के बाद अनुसंधान उघोगो के लिए आवश्यकता हैं क्योंकि

1 प्रभाव को समझनाः अवसरों और चुनौतियों भरतीय उघोगो पर वैश्वीकरण के प्रभावो को समझना

2 वृद्धि के लिए क्षेत्रा की पहचान करनाः विभिन्न उघोगो वषद्धि और विकास के लिए क्षेत्रो की खोज करना।

3 प्रतिस्पर्धा में सुधारः

4 वैश्वीक बाजार में भरतीय उघोगो की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढाना।

5 नीतिगत निर्णयो की जानकारी देनाः

6. नीति निर्मताओं को व्यापार नीतियों विनियमो और प्रोत्साहनों के बारे मे सूचित निर्णय लेने के लिए अतंदृष्टि प्रदान करना।

7. चुनौतियों को संबोधित करना नौकरी विस्थापन नयर्यवरणीय चिंताओ और सामाजिक निहितार्थ जैसी चुनौतियों का समाधान करना।

8. नौकरी विस्थापन, पर्यावरणीय चिंताओं और सामाजिक निहितार्थ जैसी चुनौतियों का समाधान करना।

9. अवसरो को आनलॉक करना: विदेशी निवेश, प्रौघोगिकी हस्तातंरण और बाजार पहुँच जैसे अवसरों का लाभ उठाना।
10. नवाचार को बढावा देना और आर्–डी को बढावा देने के लिए समष्टिगत परिवर्तन किए गए है।

ध्यातव्य है कि 2014 से पहले doing ease business index me भारत की ज्ञानात्मक पहलू बहूत कमजोर थी जो 150 रैंक से भी बाहर थी पंरतु 2022 के आंकडो से भारत ने COVID 19 का बेहतर प्रबंधन किया कयी वैक्सीन का परिक्षण और निर्माण किया गया क्तिीय सकंट की पष्ठभूमी को डिजिटल तकनीक से दूरदृष्टि की प्रबंधन प्रणाली विकसित किया जिससे नवाचार रैंक 42 पर हो गयी।

अध्ययन और डाटा विश्लेषण यह बताते है कि 1990 से 2010 तक भारत मे नवाचार सरकारी विभगो तक ही सीमित था। जो कुल खर्च का 75 प्राप्त हुआ है। जबकी निजी क्षेत्र में यह मात्र 25 का योगदान करती है हैरानी की बात यह है कि विकसित देशो में यह ठीक उल्टा है अमेरिका मे नवाचार का योगदान निजी क्षेत्र में 75 और सरकारी विभगो में यह मात्र 25 योगदान होता है यह तसवभ्र अवश्य ही बदलनी चाहिए।

उदारीकरण के मध्यप्रदेश में बुनियादी ढांचे के विकास मे सरकारी प्रयासो में 2024-25 बजट मे बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 53000 करोड रूपये अधिक आवंटित करना पर्यटन को बढावा देने के लिए धार्मिक स्थानो पर बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान कद्रित करना महिलाओ और बाल कल्याण का समर्थन करने के लिए लाडली बहना योजना की तरह योजनाएं विविध क्षेत्रो के लिए एक मजबूत समर्थन बुनियादी ढांचा बनाने के लिए सार्वजनिक निजी साझेदारी पर जोर देना बुनियादी ढांचा विकास आधुनिक खाघ सिलो परिसरो और आधारभूत सरंचना परियोजनाओं की स्थापना निवेश हब के रूप में भोपाल ग्वलियर और इंदौर विकसित करना विभिन्न परियोजनाओं कें माध्यम से राज्य बुनियादी ढांचे को मजबूत करना घरेलू और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए वैश्वीक निवेश शिखर सम्मेलन का अयोजन कार्यान्वयन मध्य प्रदेश शहरी सेवा सुधार परियोजना जैसी परियोजनाएं शामिल है।

उदारीकरण के बाद मध्यप्रदेश मे रोजगार और प्रतिस्पर्धा के प्रबंधन में महत्वपूर्ण बदलाव हुए है। जिनमे शामिल है।

1. निजी क्षेत्र की वृद्धि उदारीकरण ने निजी क्षेत्र निवेश में वृद्धि की जो आईटी फार्मास्यटिकल्स और ऑटोमोबाइल जैसे उघोग मे नए नौकरी के अवसर पैदा कर रही है।
2. बढी हुंई प्रतियोगिता वैश्वीक खिलाडियो की प्रविष्टि के साथ सांसद मे उघोग मे प्रतिस्पर्धा मे वृद्धि हुई जिससे बेहतर उत्पाद की गुणवता और सेवाओ का सामना करना पडा।
3. कौशल विकास बढते उघोगो की जरूरतो को पूरा करने के लिए कार्यबल की नियुक्ति को बढ़ाने के लिए विभिन्न कौशल विकास कायक्रम शुरू किए गए थे।
4. उघमिता उदारीकरण ने उघमशीलता को प्रोत्साहित किया जिससे स्टार्टअप और छोटे पैमाने पर उघोगो की स्थापना रोजगार के अवसरों को उत्पन्न किया।
5. सार्वजनिक निजी साझेदारी निजी कंपनियो के साथ बुनियादी ढांचे परियोजनाओं को विकसित करने नौकरियों को बनाने और आर्थिक विकास को उतेजित करने के लिए सहयोग किया।

6. श्रम सुधार सरकार ने अधिक व्यावसायिक अनुकुल माहौल बनाने निवेश को आकर्षित करने और रोजगार को बढावा देने क लिए श्रम सुधारो को लागू किया।
7. मानव पूंजी मे निवेश सरकार ने एक कुशल श्रमिको को विकसित करने उघोग की मांगो को पूरा करने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमो पर ध्यान केद्रित किया।
8. प्रचार उघोग सरकार ने रोजगार के अवसरों को बनाने के लिए वस्त्र खाघ प्रसस्करण और ऑटो घटको जैसे उघोगो को बढावा दिया।
9. अभिनव को प्रोत्साहित करना invention और उघमिता को बढावा देने के लिए ऊष्मायन केद्रों और नवाचार केन्द्रों की तरह पहल की स्थापना की गई।
10. श्रम कानूनो का सरलीकरण सरकार ने नौकरशाही बाधाओं को कम करने के लिए श्रम कानूनो को सरल बना दिया और व्यापारियों को सांसद मे संचालन स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन परिवर्तनो ने मध्य प्रदेश में रोजगार के अवसरों और प्रतिस्पर्धा के विकास मे योगदान दिया है। जो राज्य को उघोग और उघमिता के लिए एक केंद में बदल रहा है।

सन्दर्भ

1. डॉ सिंह मनमोहन पोस्ट रिफॉर्म ऑक्सफोर्ड प्रेस लदंन।
2. डॉ सिंह रमेश भरतीय अर्थव्यवस्था यस चद्रं प्रकाशन नयी दिल्ली।
3. डॉ भरत झुनझुनवाला भारत की अर्थनीति।
4. मिश्रा और पूरी भारतीय अर्थव्यवस्था नयी दिल्ली।
5. प्रो लाल यस एन भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वेक्षण शिव Publication Pryagraj .
6. योजना आयोग भारत सरकार
7. श्री रंगराजन सी भारत की अर्थनीति 2004
8. विश्व बैंक रिपोर्ट 2000
9. अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोश की वार्षिक रिपोर्ट 2010
10. Outlook पत्रिका 2000
11. वार्ता जर्नल Allahabad विश्वविद्यालय
12. UPEA जर्नल 2018 ISSN 0975-2392
13. Meta Artifical Intelligence Google
14. भारतीय शोध शिक्षा पत्रिका 36/2/जुलाई 2017 लखनाऊ
15. डॉ पांडेय विघा नन्द गांधी के आर्थिक विचार और भूमंडलीकरण Reserch Journal IJRAR21A1072, www.ijrar.org pAge 1209, ISSN 2349-5138
16. डॉ पांडेय विद्या नन्दः नयी शिक्षा नीति Insha Publications New Delhi ISBN 93-88647-60- Nov.2023 p. **48**
17. शोध पत्रिका सामाजिक शोध संस्थान भोपाल 2018
18. डॉ पांडेय विघा नन्द यूजीसी Sponcerd Research Journal, Bhopal] School of Social Science.